

आनंद के लिए पढ़ना

सोनिका कौशिक*

बच्चों को पढ़ने में आनंद आए इसके लिए बहुत-सी बातों को सुनिश्चित करना आवश्यक है। इसमें एक अहम पहलू है, उनका पढ़ना-सीखने का अनुभव और दूसरा है पढ़ने की सामग्री की उपलब्धता, विविधता और गुणवत्ता। यह आलेख दूसरे पहलू पर गौर करते हुए कुछ तरीके सुझाता है। लेख कुछ ऐसे क्षेत्रों पर ध्यान खींचता है जहाँ प्रयासों की ज़रूरत है। इस आलेख में शिक्षकों की भूमिका को भी जाँचा गया है। इसके साथ ही लेख में बच्चों को पढ़ना सिखाने के संदर्भ में व्यावसायिक क्षमताओं को विस्तार देने की ज़रूरत पर भी गौर किया गया है।

बच्चों के लिए आनंद के साथ पढ़ने को संभव बनाना किसी भी शिक्षा प्रणाली और समाज के लिए एक वांछनीय लक्ष्य है। भारत में कितने ही दस्तावेजों में आनंदमयी शिक्षा पर बल दिया जाता है। पढ़ने में आनंद को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर कार्यक्रम और अभियान चलाए जाते हैं। मैंने इस आलेख में उन साधनों और कारकों को विस्तारपूर्वक कहने की कोशिश की है जो पढ़ने में आनंद को संभव बना सकते हैं। पर उससे पहले संक्षेप में यह समझा जाए कि आनंद के लिए पढ़ना असल में है क्या?

पढ़ने में आनंद का क्या अर्थ है?

पढ़ना रोज़मर्रा के सामान्य कामों के साथ इस तरह बुना हुआ है कि जो पढ़ना जानते हैं वे शायद गौर भी न कर पाएँ कि पढ़ना किस तरह उनकी दैनिक जीवन के कितने ही कामों को मुकम्मल बनाता है— चाहे बात अखबार पढ़ने की हो या मोबाइल पर मैसेज पढ़ना या फिर दुकान से सौदा खरीदना आदि। इन सब कार्यों में पढ़ना एक अहम किरदार निभाता है। शोधकर्ता और सिद्धांतकार

पढ़ने को एक सामाजिक गतिविधि मानते हैं। फिर भी दूसरे स्तर पर इसे एक व्यक्तिगत और निजी गतिविधि के रूप में भी समझा जा सकता है। पढ़ने के दौरान, पाठ्य सामग्री और पाठक के बीच में हो रही अंतर्क्रिया किसी को नज़र नहीं आती। उस अंतर्क्रिया से पाठक दुनिया और समाज के बारे में समझ बनाता है और उस समझ के आधार पर दुनिया के साथ अपना व्यवहार एवं संबंध तय करता है। यह समझ समाज के ऐतिहासिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक जैसे तमाम परिप्रेक्ष्यों और मान्यताओं पर आधारित हो सकती है। जब पाठक इनसे रूबरू होता है तो वह स्वयं को भी उस सामाजिक ढाँचे में समझने की कोशिश करता है। इस तरह से पढ़ना एक सामाजिक और व्यक्तिगत गतिविधि दोनों ही है। जाहिर है संसार और खुद को लेकर समझ केवल पढ़ने से ही नहीं बनती। पढ़ना एक ऐसी प्रक्रिया और अनुभव है जो पाठक की अपने और अपने आस-पास की दुनिया के बारे में समझ को बदल सकता है। दुनिया की समझ बनाना और दुनिया के संदर्भ में

*लीड, प्रोफेशनल डेवलपमेंट, पराग, टाटा ट्रस्ट्स, नयी दिल्ली

खुद को देखने में सक्षम होना पाठक के लिए आनंद का स्रोत बन जाता है। तो फिर पढ़ने में आनंद आना सीधा-सीधा समझ से जुड़ता है। उदहारण के लिए, जब पाठक किसी पाठ्य सामग्री को पढ़ता है तो ऐसे कई बिंदु हो सकते हैं जिनके आधार पर पाठक जुड़ाव महसूस करे। वे बिंदु, परिस्थितियाँ या एक पात्र का व्यवहार या फिर भावनाएँ हो सकती हैं, दर्शाए गए किसी समूह के साथ पहचान हो सकती है। यह भी संभव है कि पढ़ना पाठक के सामने अपरिचित या अनसुनी जानकारी अथवा परिप्रेक्ष्य सामने रखता है और पाठक दुनिया को या फिर स्वयं को एक नए तरीके से देख पाता है। यह न केवल आनंद देता है, बल्कि यह पाठक को सशक्त भी बनाता है।

आनंद के लिए पढ़ना कैसे संभव बनाया जाए

मैं एक बहु-आयामी दृष्टिकोण का प्रस्ताव रखूँगी जो बच्चों के लिए पढ़ने में आनंद को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का एक व्यापक दृष्टिकोण है। इसके साथ आवश्यक है कि भारतीय संदर्भ की विभिन्न विशेषताओं और चुनौतियों पर भी हमारी नज़र बनी रहे। निम्नलिखित भाग में मैंने ऐसे कुछ कारकों के बारे में विस्तार से बताया है।

अच्छे साहित्य की उपलब्धता

बच्चों के लिए आनंद के साथ पढ़ने के लिए सबसे पहली और स्पष्ट शर्त पुस्तकों की उपलब्धता है। भारत जैसे विशाल और बहुभाषिक देश के लिए यह बहुत बड़ी चुनौती है। इसके साथ ही भाषाओं की विविधता इसे और भी जटिल बनाती है। बाल साहित्य में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए बहुत-सी बातों पर गौर करना होगा।

जीवन, भाषाओं, संस्कृतियों और मान्यताओं की विविधता का प्रतिनिधित्व— यह सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक माना जा सकता है जो यह प्रभावित करता है कि जब बच्चे पढ़ने के लिए पुस्तक उठाते हैं तो अपने बारे में कैसा महसूस करते हैं। पुस्तकों में अपनी तरह के पात्रों, उनके जीवन और उनकी दुनिया से मिलना उनके पढ़ने के अनुभव पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। दुर्भाग्य से, वास्तविक जीवन और पुस्तकों के बीच का फ़ासला बहुत बड़ा है। निष्क्रिय परिवार, दुर्व्यवहार, शोक, सामाजिक या आर्थिक वर्ग या जेंडर के आधार पर अनुचित व्यवहार और भेदभाव, बड़े होने की उथल-पुथल, कुछ समुदायों या भौगोलिक क्षेत्रों में जीवन, कुछ ऐसे विषय हैं जो वास्तविकता का हिस्सा हैं, लेकिन पुस्तकों में उनका प्रतिनिधित्व बहुत कम है या फिर बेहद सतही है। इस जटिल वास्तविकता को संबोधित करने के लिए कोई आसान समाधान नहीं है। बच्चों के साहित्य में केवल इस फ़ासले को भरने के लिए ज़बरदस्ती साहित्य विकसित नहीं किया जा सकता है। इसके लिए ज़रूरी है उन लेखकों को ढूँढना और उनकी सराहना करना जिनके पास बताने के लिए कहानी है। सामग्री का संवेदनशील और प्रामाणिक प्रतिपादन यहाँ महत्वपूर्ण है। फिर ऐसी भाषाएँ हैं जिनमें बच्चों के लिए बहुत कम या कोई साहित्य प्रकाशित नहीं है। मोटे तौर पर, यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसने ध्यान आकर्षित किया है और इस पर बहुत काम हुआ है तथा अभी भी निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। इस दिशा में लगातार और प्रयासों से अधिक-से-अधिक ऐसी पुस्तकें बच्चों के हाथों में आएँगी जो उनसे बात करती हों।

साहित्य की विविध विधाएँ— बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं का भारतीय भाषाओं में असमान प्रतिनिधित्व है। कहानियों का संग्रह, विशेष रूप से लोककथाएँ शायद भारत में सबसे अधिक उत्पादित प्रकार की पुस्तकें हैं। दुनिया के कुछ हिस्सों में बच्चों के लिए पुस्तकों के विभिन्न प्रकार वास्तव में विचारणीय हैं। पुस्तकों के इस तरह के विविध उत्पादन में अच्छी संकल्पना की बहुत बड़ी भूमिका है। अच्छी जानकारीपरक पुस्तकें, आत्मकथाएँ, अवधारणा पुस्तक, आयु-उपयुक्त सामग्री के साथ अलग-अलग उम्र के नाटक और प्रस्तुति बच्चों के लिए बिल्कुल अपर्याप्त हैं। उदाहरण के लिए, वर्णमाला बुक्स की श्रेणी के भीतर अक्षर की पुस्तकों (अल्फाबेट बुक्स) पर विशेष रूप से काम करने की आवश्यकता है। यह आश्चर्य की बात है कि अक्षर ज्ञान पर बहुत स्पष्ट रूप से केंद्रित कार्यक्रमों के बावजूद भारतीय भाषाओं में शायद ही कोई दिलचस्प वर्णमाला पुस्तक है। यह बात जरूर है कि वर्णमाला या अक्षर ज्ञान पुस्तक केवल अक्षर ज्ञान तक बिल्कुल सीमित नहीं रहतीं। उनका दायरा बहुत बड़ा है। केट ग्रीनवे से लेकर डॉ. सुअस से लेकर ओलिवर जेफर्स तक, अधिकांश लेखकों और चित्रकारों ने शुरुआती दौर के पाठकों के लिए वर्णमाला पुस्तक बनाई हैं। वर्णमाला पुस्तक विभिन्न आयु समूहों में बेहद लोकप्रिय हैं और जिन समाजों या देशों में अक्षरों पर आधारित पुस्तकें उपलब्ध हैं वहाँ बच्चे अक्सर कई वर्णमाला पुस्तक पढ़ते हैं। इसी तरह भारतीय भाषाओं में किशोरों के लिए गिने-चुने ही उपन्यास हैं।

कई प्रारूपों में साहित्य— बच्चों को विभिन्न रूपों में एक परिचित कहानी या कविता से बार-बार

मिलना पसंद है क्योंकि प्रत्येक नया प्रारूप नवीनता लाता है और उनके पढ़ने के अनुभव को बढ़ाता है। सौभाग्य से यह अनुकूल तरीकों से उत्पादन की लागत को भी प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, कक्षा में पढ़कर सुनाई गई कहानी के कहानी कार्ड कक्षा पुस्तकालय में पुस्तक को सुलभ बनाने के साथ-साथ पढ़ने के लिए पूरी कक्षा हेतु उपलब्ध कराए जा सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि अकॉर्डियन पुस्तकों, बड़ी पुस्तकों (बिग बुक्स) और कविता कार्ड जहाँ-जहाँ पहुँच सकीं वहाँ-वहाँ उनका स्वागत हुआ है। कहानी या कविता या कांसेप्ट बुक्स को बढ़ावा देने के लिए कई और प्रारूपों की आवश्यकता है।

ऑनलाइन संसाधन— कोविड महामारी ने हमें एक ऐसी स्थिति में ला खड़ा किया है जहाँ हम ऑनलाइन संसाधनों के इस्तेमाल करने के लिए मजबूर हो गए हैं। मैं ऑनलाइन संसाधनों को कागज़ की पुस्तकों और आमने-सामने की बातचीत के विकल्प के रूप में बिल्कुल नहीं देखती। हालाँकि, ऑडियो-वीडियो सामग्री निश्चित रूप से किसी पुस्तक को पढ़ने के अनुभव को विस्तार दे सकती है। किसी पुस्तक के लेखक या चित्रकार को स्क्रीन पर बात करते हुए देखना या सुनना शिक्षकों और बच्चों दोनों के लिए रोमांचक हो सकता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी पर्याप्त खोज नहीं की गई है और गुणवत्तापूर्ण ऑनलाइन संसाधनों को विकसित करने की आवश्यकता है। इस संभावित संसाधन को बिना पर्याप्त सोचे-समझे खारिज नहीं किया जाना चाहिए। बाल साहित्य का डिजिटल पुस्तकालय उन शिक्षकों के लिए एक संसाधन

हो सकता है जिनके पास पढ़ने के संसाधनों तक आसान पहुँच नहीं है।

अच्छे साहित्य तक पहुँच

अच्छा साहित्य बच्चों के हाथों तक कैसे पहुँचाया जाए— यह एक चुनौतीपूर्ण सवाल है। बच्चों तक यह साहित्य उनके माता-पिता और देखभाल करने वालों या बड़े समुदाय और स्कूल अथवा आँगनवाड़ी जैसी प्रणालियों के माध्यम से पहुँचाया जा सकता है। सिस्टम में रिक्त स्थान और माध्यमों की पहचान करना बच्चों के लिए पुस्तकों की उपलब्धता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

आँगनवाड़ी— किसी भी इलाके में आँगनवाड़ी एक ऐसा स्थान है जहाँ महिलाएँ और बच्चे इकट्ठा होते हैं भले ही वे आँगनवाड़ी प्रणाली के लाभार्थी न हों। आँगनवाड़ी केंद्रों पर छोटे बच्चों के लिए पुस्तकें उपलब्ध कराने के अलावा, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं को अपने नवजात शिशुओं को पढ़कर सुनाने के लिए या फिर खुद के पढ़ने के लिए, पुस्तकें उधार लेने की व्यवस्था की जा सकती है। यह समझते हुए कि इनमें ऐसी महिलाएँ भी होंगी जो पढ़ नहीं सकतीं, पढ़ने या कहानी सुनाने के सत्र आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा भी आयोजित किए जा सकते हैं। यह प्रयास प्रारंभिक वर्षों में पढ़ने के महत्व पर प्रकाश डालता है और उन वर्षों में प्रवेश करता है जहाँ स्कूल की पहुँच नहीं है। घरों में पुस्तकों का प्रवेश हो, उस दिशा में यह एक बहुत शक्तिशाली बदलाव हो सकता है।

स्कूल— कक्षाएँ और स्कूल पुस्तकालय ऐसे स्थान हैं जहाँ बच्चों की पढ़ने के संसाधनों तक पहुँच प्राप्त

हो सकती है। स्कूलों में सप्ताहांत या विशेष दिनों में अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित करने की क्षमता होती है, जब पढ़ना, कहानी सुनाना, नाटक और पुस्तकें समुदाय के लिए ध्यान में आ सकती हैं। महाराष्ट्र में चावडी वाचन एक दिलचस्प सामुदायिक पठन कार्यक्रम था जहाँ समुदाय अपने बच्चों को पढ़ते हुए सुनने के लिए एकत्रित होता था। स्पष्ट दिशानिर्देश के अभाव और पठन संसाधनों की कमी के कारण कार्यक्रम के प्रभाव को बहुत स्पष्ट तरीके से नहीं देखा जा सका।

सार्वजनिक पुस्तकालयों को सुदृढ़ करना— सार्वजनिक पुस्तकालय एक ऐसी प्रणाली है जिसे पुनर्जीवित किया जा सकता है। यह एक सहयोगी प्रयास हो सकता है। यह एक ऐसा माध्यम है जिसे आगे स्थानीय स्कूलों से जोड़ा जा सकता है और इस प्रकार पुस्तकों का प्रसार हो सकता है।

गुणवत्तापूर्ण साहित्य की उपलब्धता और उसकी पहुँच में शामिल होना पुस्तकों की भौतिक उपस्थिति सुनिश्चित करता है। सबसे बड़ी चुनौती बच्चों के लिए ऐसा माहौल तैयार करना है जहाँ पढ़ने को महत्व दिया जाए और उसका आनंद उठाया जाए। यह भारत के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है जहाँ साक्षरता एक चिंता का विषय बना हुआ है। पढ़ना व्यापक रूप से प्रचलित गतिविधि नहीं है। पढ़ने की सामग्री का अभाव है और एक बड़ी आबादी जो गरीबी और अल्पपोषण से जूझती है। बच्चों को ऐसे परिवेश और माहौल की जरूरत है जहाँ उनके आस-पास के अन्य लोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए पढ़ते हों। बच्चों को अपने आस-पास के महत्वपूर्ण अन्य लोगों को देखने की जरूरत है, जिस तरह से वे अपने दैनिक काम करते हैं,

उसी तरह से पढ़ते भी हैं। इस प्रकार, वे बच्चों के लिए पढ़ने की प्रक्रिया का प्रदर्शन करते हैं और उन्हें इसमें शामिल होने के लिए प्रेरित करते हैं।

रोल मॉडल

अनेक शोधों से यह स्पष्ट रूप से सामने आता है कि बड़े भाई-बहनों और देखभाल करने वाले या नियमित रूप से पढ़ने वाले वयस्कों के घरों में बड़े होने वाले बच्चे नन्हें पाठकों का पोषण करते हैं। यह ज़िम्मेदारी राज्य द्वारा संचालित स्कूल प्रणाली के कंधों पर भी है। हमारे स्कूलों की ज़िम्मेदारी है कि वे ऐसा वातावरण प्रदान करें जहाँ नियमित रूप से पढ़ना होता हो। इसका अर्थ यह भी है कि शिक्षक भी एक पाठक होना चाहिए जो अपनी कक्षा में बच्चों को पढ़ने के अपने आनंद को साझा करने में सक्षम हो।

शिक्षकों को पाठकों के रूप में पोषित करना—हम ऐसा समाज नहीं हैं जो शिक्षा से प्रेरित इतर उद्देश्यों के लिए पढ़ने को महत्व देता है। शिक्षकों के लिए एक कार्यक्रम जिसमें शिक्षक अपनी भाषा में अच्छा साहित्य पढ़ सकते हैं, खुद को पाठक के रूप में देख सकते हैं और अपनी पढ़ने की प्रक्रिया पर गौर कर सकते हैं; एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। अक्सर ऐसा होता है कि शिक्षक स्वयं पाठक होने के महत्व को ज़्यादा तवज्जो नहीं देते हैं। अधिकांश कक्षा में पढ़ने के कौशल और साहित्य से बहुत ही सीमित परिचय के साथ आते हैं। यह शुरुआती पाठकों के विकसित हो रहे पठन कौशल को प्रभावित करता है। शिक्षक बच्चों के पढ़ने को तभी संबल दे पाएगा जब वह स्वयं एक पाठक हो। अपने उत्साह और पढ़ने के जुनून को प्रदर्शित करने वाले शिक्षक की अनुपस्थिति में कक्षा में सर्वश्रेष्ठ बाल साहित्य की उपलब्धता अप्रभावी रहने की संभावना है।

शिक्षकों को नए विचार चाहिए— देश में प्रायः शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से स्नातक होते हैं जिससे वे पढ़ने की प्रक्रिया और बाल साहित्य के बारे में बेहद सीमित समझ बना पाते हैं। चूँकि शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के बाल साहित्य का अनुभव नहीं होता है और पढ़ने की उनकी समझ सीमित होती है, इसलिए उन्हें इस बारे में अधिक जानकारी नहीं होती है। शिक्षकों को कक्षा में पढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के अवसरों की अवधारणा करना और बनाना मुश्किल लगता है। इसलिए, गुणवत्तापूर्ण पठन संसाधनों और पठन प्रक्रिया के बारे में समझ विकसित करने के अलावा शिक्षकों को उन गतिविधियों तक पहुँच की आवश्यकता होती है जिन्हें वे अपनी कक्षाओं में आयोजित कर सकते हैं।

शोध

सौभाग्य से पिछले दो दशकों में भारत में बाल साहित्य के इर्द-गिर्द विमर्श विकसित होने लगा है। इस क्षेत्र में कई लोग एक सूचित दृष्टिकोण से बात कर रहे हैं और अधिक प्रश्न उठाए जा रहे हैं। हालाँकि, इस संवाद को आगे सूचित करने के लिए हमें और अधिक शोध की आवश्यकता है। बहुभाषावाद, पात्रों के प्रतिनिधित्व और संदर्भों जैसे विषयों को शोध में जगह मिली है, लेकिन हमारे पास कक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करने वाले शोध की बहुत कमी है। हमें इस पर शोध करने की आवश्यकता है कि किस तरह से कक्षाओं में अच्छे साहित्य की उपलब्धता और साहित्य का उपयोग कक्षाओं की प्रक्रियाओं और विशेष रूप से पढ़ने को प्रभावित करता है। इस तरह के शोध दिशा दिखाएँगे कि शिक्षकों और बच्चों को क्या चाहिए और बाल

साहित्य विकसित करने के बारे में हमें क्या निर्णय लेने की आवश्यकता है।

बच्चों को आनंद के साथ पढ़ते हुए देखने के लिए हमें कई और रास्तों की पहचान करने की

आवश्यकता है। हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि बच्चों तक पहुँचने और उन्हें पाठक बनाने के विशेष प्रयासों से समाज भी धीरे-धीरे बदलेगा और हम पढ़ने को एक प्रचलित गतिविधि के रूप में देख पाएँगे।